स्त्री विमर्श की लेखिका–शिवानी

डॉ. मकरन्द भट्ट,

व्याख्याता–हिन्दी विभाग, राजकीय महाविद्यालय, चिमनपुरा

स्त्री विमर्श उत्तर–आधुनिकता का प्रधान और चर्चित संदर्भ बन गया है। ध्यान देने योग्य बात यह है कि जब विचारधाराएं अपनी अर्थवत्ता खो देती हों तब साहित्य चर्चा के केन्द्र में स्त्री विमर्श जैसे पहलू उभरकर सामने आते हैं, किन्तु महत्त्वपूर्ण बात यह है कि बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में ही ऐसी अनेक लेखिकायें हुई हैं, जिन्होंने स्त्री–विमर्श को केन्द्र में रखकर अपने रचना संसार का निर्माण किया है। प्रसिद्ध और लोकप्रिय कथा लेखिका शिवानी के रचना संसार का आकलन इसी बिन्दु से करने का प्रयास प्रस्तुत आलेख में किया जा रहा है।

शिवानी के उपन्यासों में नारी की वैयक्तिक और आर्थिक स्वतंत्रता को सबल समर्थन मिला है। उनका मानना है कि नारी की आर्थिक परतंत्रता के कारण ही परिवार और समाज में उसकी स्थिति हीन है। जब तक वह आर्थिक रूप से स्वतंत्र नहीं हो जाती तब तक न तो परिवार और समाज में उसको सम्मान मिल सकता है और न उसके व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास हो सकता है। अतः उनके उपन्यासों की नायिकाएं आर्थिक एवं वैयक्तिक रूप से स्वतंत्र हैं। **'कैंजा' की नन्दी पेशे से डॉक्टर है और 'जीवन के उन शुष्क बत्तीस वर्षों में नन्दी, तिवारी को कभी किसी पुरूष के कंधे का सहारा लेने की आवश्यकता नहीं पड़ी थी। निरन्तर प्रयास में ही रहकर उसने डाक्टरी पास की और फिर बिरादरी में बहुत दूर विभिन्न शहरों में घूमकर अपना पेट पालती रही।''**[1]

'भैरवी' की राजेश्वरी ने हवेली की तीन कोठरियां अपने लिए रखकर पूरी हवेली गर्ल्स स्कूल बनवाने के लिए दान कर दी। स्कूल चला और चलते चलते कॉलेज बन गया और उसी कॉलेज के साथ–साथ कदम रखती चल पड़ी स्वयं राजेश्वरी। कुछ समय पश्चात् वह कॉलेज की प्रिंसिपल बन गई।''[2]

'श्मशान चम्पा' की नायिका डॉक्टर है। वह अपने कार्य के प्रति समर्पित है। **'चलखुसरो घर आपने' की कुमुद बड़े कष्ट से गृहस्थी की गाड़ी को खींचती है, इसी से बारह सौ रुपये के वेतन का चुग्गा उसे उस अज्ञात कस्बे से इतनी दूर खींच लाया। वह राजा राजकमल सिंह की पागल पत्नी मालती की कम्पैनियन बन अपने परिवार की मदद करती है।**[3] इस प्रकार कहा जा सकता है कि नारी की वैयक्तिक स्वतंत्रता को स्वीकार करते हुए भी शिवानी ने उसके आचरण की मर्यादा पर विशेष बल दिया है। उसे इतनी वैयक्तिक स्वतंत्रता प्रदान नहीं की है कि उसका व्यवहार उच्छृंखल कहा जा सके। उनका मानना है कि भारतीय नारी को वैयक्तिक स्वतंत्रता देने पर भी उसके मन में अनजाने ही परम्परागत पतिव्रत संस्कार इतने प्रबल हैं कि विषम से विषम परिस्थिति में भी वह अपनी स्वतंत्रता का दुरूपयोग नहीं करती। **स्वयंसिद्धा** की नायिका **माधवी** इसका प्रमाण है–**''उसके रूखे स्वभाव, ईमानदारी, कार्यपटुता और सर्वोपरि अपने पुरूष सहकर्मियों से गज भर की दूरी बरतने की अनेक किवदंतियां प्रसिद्ध हो चुकी थी। अपने अक्षत कौमार्य को वह जिस अमानवीय आत्म संयम से बत्तीसी के बीच जीभ सी सेंतती चली आई थी। उसका प्रमाण गहरी कठोर झुर्रियों के रूप में उसके पूरे चेहरे पर फैल उसके लावण्य को लील चुका था।''**[4]

नारी शिक्षा के विस्तार से जहा¡ जीवन में नए दृष्टिकोण का विकास हुआ वहीं पश्चिमी सम्पर्क के प्रभाव के फलस्वरूप पश्चिम देशों की नारियों की भांति फैशन एवं विलास की प्रवृत्ति बढ़ी और जीवन में अत्यधिक आधुनिकता के प्रति आग्रह भी बढ़ा। जीवन अंदर ही अंदर तो खोखलेपन की सीमा पार करता जा रहा था पर ऊपर से प्रदर्शन करने की भावना भी बढ़ी है। नारिया¡ अब प्रत्येक कार्य अपनी रूचि के अनुसार करना चाहती है और अपनी विलासिता, नग्न प्रदर्शन और बेहयाई पर अधिक बल देने लगी हैं तथा भारतीय परम्पराओं, नारी के महान आदर्शों एवं अतीत के गौरव को पूर्णतया भुला देना चाहती हैं तथा अपने वर्तमान और भविष्य को एक ऐसे सांचे में ढालना चाहती हैं, जहा¡ सेक्स की अत्यधिक स्वतंत्रता प्राप्त हो सके और समाज उनकी राहों में न आये। फ्रॉयड ने काम को चेतन जगत के समस्त क्रियाकलापों का मूल स्वीकार कर काम तत्व के नये क्षितिज का उद्घाटन किया था। अब यह आवश्यक नहीं कि जिसके साथ काम सम्बन्ध हो उससे प्रेम हो तथा विवाह भी हो, जिससे विवाह हो उसी से काम सम्बन्ध भी हो। **डॉ. सुखदेव शुक्ल** ने परिवर्तित मानसिकता की ओर संकेत करते हुए लिखा है–**''मानव के अन्तर्मन में बैठकर उसकी कर्म प्रेरणा, प्रवृत्ति, जटिलता और कुण्ठा की मनोवैज्ञानिक व्याख्या करने के प्रयास में उपन्यासकार ने जीवन को नए दृष्टिकोंण से देखा और इसके नए मूल्य और नए आदर्श निर्धारित करने शुरू किए।''**[5]

शिवानी की ऐसे पात्रों की परिकल्पना करने के पीछे यही उद्देश्य है कि वो एक ऐसी नारी का चित्रण करना चाहती है जो पश्चिमी संस्कार, फैशन, विलास एवं सेक्स को ही जीवन समझती है, पर इसमें कहीं कल्याण नहीं, मंगल नहीं। **मायापुरी की सविता** एक ऐसी ही पात्र है। मदन के प्रति उसके मन में जो आकर्षण था उस पर टिप्पणी करते हुए शिवानी ने लिखा है–**''वह वयस में सविता से दस वर्ष छोटा होने पर भी उसका कृपा पात्र था। दिन–रात तिवारी प्रासाद में ही रहता था। सविता की निरंतर कृपा के फलस्वरूप उसे एक अच्छी सरकारी नौकरी हासिल हो गई थी। उसे लेकर सविता के लिए भद्दी बातें भी उड़ चुकी थी, किन्तु नूतन प्रणय की बाढ़ में बहती सविता अपनी लज्जा वयस, गौरव सब भूल बैठी, सतीश उसके लिए आड़ मात्र था।**[6]

इस उपन्यास की अन्य पात्र रानी और उसके देवर के मध्य विकसित होने वाले रिश्ते के विषय में शिवानी ने लिखा है–**''क्रूर वैधव्य ने जब उसका सिंदूर पौंछा, वह तब थी मात्र अट्ठारह वर्ष की। राज्य का भार संभालने युवक देवर आए। उजाड़ महल में फिर विलास का संस्पर्श हुआ। दिन रात कमरे में पड़ी रोती कलपती रानी फिर दर्पण के सम्मुख खड़ी होने लगी। पहले पर्दे की ओट में देवर से बात करती थी। अब दोनों घंटों राज्य के कागजों पर बहस करते। युवा देवर उन्हें शतरंज सिखाता, और दोनों तराई में शेर के शिकार के लिए निकल पड़ते। गरमी में नैनीताल की विशाल कोठी में रानी अकेली देवर के साथ ही रहने लगी। इसी भांति न जाने कब दोनों यौवन की उद्दाम लहरों में बह चले।**[7]

'चल खुसरो घर आपने' के राजा राजकमल सिंह कुमुद को मरियम के निर्लज्ज आचरण के विषय में इन शब्दों में बताते हैं –**''एक दिन मैं अपने कमरे में सो रहा था कि आधी रात को देखा मरियम मेरे सिराहने बैठी एकटक देख रही है। मैं चौंक कर उठ बैठा यह क्या मिस जोजफ, आप यहा¡ क्या कर रही हैं? उसने मेरे दोनों हाथ पकड़ लिए–मुझसे आप यह पूछ रहे हैं? कैसे पुरूष हैं आप? क्या आपकी आ¡खें नहीं हैं, देख नहीं रहे हैं आप? मेरा पूरा शरीर आपके प्रेम की ज्वाला में कैसा धधक रहा**

है? नारी का यह निर्लज्ज रूप मैं पहली बार देख रहा था।''[8]

'स्वयंसिद्धा' की **राधिका, माधवी** को अपने तथा कौस्तुभ के विषय में बताते हुए कहती है कि–**''बुड्ढ़ा पलंग पर पड़ा गोंगियाता रहता है। उधर मेरी चा¡दी ही चा¡दी है। न सास–ससुर न देवर, जेठ, दिन भर बुड्ढे की सेवा करती हूँ और जब रात को तुम्हारे भोले सास ससुर सो जाते हैं, तो इसी खिड़की से कूद कर इनकी सेवा करती हू¡ और आज वे कहते हैं इसकी किसी बात का विश्वास मत करना।''[9]**

'चौदह फेरे' की मल्लिका का आचरण भी भारतीय आदर्शों के अनुकूल नहीं है–**'उस चंचल, मुखरा, रमणी के कटाक्षों में ह¡सी में, आचरण में, कहीं भी संयम का अंकुश नहीं था। बार–बार कुशलता से वह झीने आँचल को अपने उन्नत उरोजों के अभार से जान बूझकर गिरा गिरा देती और तृषित चातकी की दृष्टि से कर्नल को ही अपनी मुग्ध चेतावनी में बांधकर गर्व से नन्दी की ओर देखकर मूक चुनौती दे डालती।''[10]** इसी उपन्यास में आगे शिवानी लिखती है–**''कर्नल मल्लिका के मुँह में कबाब ठूँसकर उसी पर झुका जा रहा था और वह बड़े खिलवाड़ की भंगिमा में इधर–उधर मुँह बचाकर निर्लज्ज हंसी हंसती कर्नल को हंसा रही थी। एक चपला नारी से पति की सामान्य प्रणयकेलि देखकर वह काँप उठी।''[11]**

'कैंजा' उपन्यास की पात्र मालदारिन है। उसका सम्बन्ध पति के अतिरिक्त गोरे विदेशी व्यक्ति से हो जाता है। जब उसके पति को यह बात ज्ञात होती है वह नौकरी छोड़कर उसे लेने गा¡व आ जाता है। वहा¡ पति पत्नि के मध्य रोज कलह होती है। मालदारिन अपने पतिको विष दे देती है–**''इसी हत्यारिन ने मुझे कुछ खिला दिया है गुरू, कसम खाकर कहता हू¡ चाय में ही कुछ घोल दिया है इसने–उसकी मृत्यु हो जाती है।''[12]**

'चौदह फेरे' उपन्यास में यौन स्वच्छन्दता की ओर विशेष आग्रह परिलक्षित होता है–**''अहल्या के जन्मदिन के पश्चात् रेक्सी, रोनिन, समीर, दौलत दारूवाला, ध्रुव सरकार आदि पिकनिक स्थल पर निकल जाते हैं। रेक्सी दौलत की आँखों की प्रशंसा करती है और दौलत अपने कटाक्ष से मानो रेक्सी को बाँध देता है। शीघ्र ही दोनों एक दूसरे से आबद्ध हो उठते हैं। अहल्या, अमित, ध्रुव, रोनन और समीर जब सूखे पत्तों को चरमराते सुन उसी दिशा में जाने लगते हैं, तब 'देखो कोई आ रहा है'' कह धड़कते हृदय से रेक्सी, दौलत को अलग हटा कपड़ों को धूल झाड़ अलग हो जाती है।''[13]**

शिवानी ने प्रेमचन्द परम्परा का पालन करते हुए काम तत्व का समाज स्वीकृत रूप प्रस्तुत किया है। नग्न या अश्लीलता को छूने वाला अमर्यादित वर्णन उनके उपन्यासों में नहीं मिलता। उन्होंने स्पष्ट किया है कि वर्तमान युग में नारी को पुरूष की भांति समान अवसर और स्थान मिलने लगा है। स्त्री पुरूष की अनुकर्त्ता मात्र न होकर अपने स्वतंत्र अस्तित्व के प्रति जागरूक हैं। समाज के विभिन्न कर्म क्षेत्रों में आगे बढ़कर स्त्री ने परम्परागत अबला के मूल्य के स्थान पर सबला नारी के मूल्य की प्रतिष्ठा की है।

शिवानी ने अपने उपन्यासों में नैतिकता के प्रश्न को उठाया है और यह स्पष्ट किया है कि नैतिकता की परिभाषा स्थान और समय के साथ परिवर्तित होती रहती है। शिवानी ने **कृष्णवेणी उपन्यास में संकेत किया है कि उत्तरी भारत के मामा के साथ विवाह नहीं किया जाता लेकिन उडीसा, गुजरात और दक्षिण भारत में यह एक सामान्य प्रथा है। उपन्यास की नायिका वेणी जब छोटे मामा के साथ अपने विवाह का विरोध करती है, तो उसकी माँ कहती है–''क्यों नहीं करेगी, सुन जरा? यही हमारे देश की रीति है, नानी ही सास बनती है।''[14]**

प्राचीन काल से यह परम्परा चली आ रही है कि यदि कोई नारी किसी पुरूष के हाथ में राखी बांध देती है, तो वह पुरूष उसका मुँह बोला भाई बन जाता है तथा भविष्य में भी वह इस बहन को सहारा व सुरक्षा प्रदान करता है। किन्तु आज राखी बांधने का कोई महत्त्व नहीं रह गया है **'श्मशान चम्पा'** की जूही तनवीर को राखी बांधती है और उससे प्रेम करने लगती है एक दिन यही तनवीर बेग विवाह का प्रस्ताव रखता है, जिसे देखकर भगवती कहती है–**''राखी बंधवाकर गृह का पुत्र बनकर भीतर घुस आया वह दुःसाहसी विजातीय घुसपैठी।''**[15]

मनोविज्ञान ने नारी के अन्तर्मन को जानने का प्रयास किया है। अतः उपन्यासकारों ने नर–नारी के आकर्षण को सहज रूप में स्वीकार किया है। पारंपरिक अर्थों में विवाह के बाद केवल पति के प्रति समर्पित होना उच्च नैतिकता मानी जाती थी। किसी अन्य की और हृदय का आकर्षण भी कुलटा कहलाने का कारण बन जाता था, किन्तु आज प्रेम और नैतिकता की परिभाषा बदल गई है। **'चौदह फेरे'** में शिवानी ने लिखा है कि–**''तीन चार वर्ष से मल्लिका उसके शरीर का ही एक अंग बन गई थी, राखल सरकार एक एक्सीडेंट में बुरी तरह आहत होकर दिमाग और जबान दोनों ही खो बैठे थे। पंगु पति को इनवैलिड चेयर और एंग्लो इंडियन नर्स को सौंपकर मल्लिका ने पति का आफिसी पद ग्रहण कर लिया था। आधुनिका किशोरी को पिता और मल्लिका के अद्‌भुत रिश्ते का ज्ञान नहीं था, ऐसा नहीं था।''**[16]

''अपनी ही जाति या उपजाति में विवाह करना हिन्दू विवाह की अपनी विशेषता रही है लेकिन अब अन्तर्जातीय और प्रेम विवाह के नए मूल्य समाज में विकसित हो रहे हैं। पहले इन विवाहों का परिवार में ही नहीं, समाज में भी विरोध किया जाता था, किन्तु वर्तमान आर्थिक एवं सामाजिक परिस्थितियाँ इन्हें स्वीकार करने के साथ ही उसे बढ़ावा दे रही हैं।'' **कृष्णकली** का प्रवीर जल्दी विवाह नहीं करना चाहता। उसकी माँ कहती है–**''प्रवीर बेटा अपने समाज की न सही क्या किसी और समाज की लड़की तुझे पसंद है? अगर ऐसा है तब भी हमें कोई आपत्ति नहीं। तेरे मामू का लड़का ही तो पिछले साल मेम ले आया है।''**[17] इस प्रकार शिवानी ने नारी को सतीत्व व देवीत्व के कटघरे से निकालकर उसे एक सम्पूर्ण मानवीय इकाई के रूप में देखने और समझने का प्रयत्न किया है।

शिवानी का रचना जगत अपनी अप्रतिम नायिकाओं के लिए प्रसिद्ध है। उनके उपन्यासों में नारी चरित्र की विविधता और विलक्षणता एक साथ नजर आती है। ये चरित्र भारतीय समाज में स्त्री की नियति को रेखांकित करते हैं। हमारी सामाजिक संरचना अपने भीतर जिन सामाजिक विकृतियों को संजोए बैठी है कहीं न कहीं उसका सिरा स्त्री की नियति से जुड़ जाता है। लेखिका ने विस्तार और गहराई के आयामों में उतरकर अपनी रचनाओं में नारी चरित्रों की बहुत सजीव प्रस्तुति की है। यह सच है कि शिवानी ने बुनियादी रूप से उस सामाजिक आर्थिक ताने–बाने को नारी के उत्पीड़न और शोषण के लिए उत्तरदायी माना है जो कि मध्ययुग से चली आ रही हमारी विषमताओं और क्रूरताओं का प्रमुख कारण है। कहने की आवश्यकता नहीं कि नारी को इस सामाजिक अधोगति तक पहुँचाने में पुरूष वर्ग का बड़ा हाथ है। शिवानी के उपन्यासों में अनेक स्तरों पर यह व्यंजना देखी जा सकती है।

यहाँ हम एक अन्य पहलू से नारी द्वारा नारी का शोषण स्त्री जाति का स्वयं अपनी नियति के लिए उत्तरदायी होना तथा पुरूष वर्ग द्वारा स्त्री जाति के शोषण में स्त्री को ही प्रमुख साधन के रूप में प्रयोग किए जाने की ओर संकेत करना चाहते हैं। शिवानी की कथाकृतियाँ स्त्री द्वारा स्त्री के शोषण को भी अपने तीक्ष्ण

विवेचन, निर्मम चित्रण और तलस्पर्शी गहराइयों में जाकर अनावृत करती हैं। एक विमाता द्वारा अपने परिवार में अबोध बालिकाओं का शोषण, ताड़न और कदाचार के दृश्य उनकी रचनाओं में मिलते हैं। ऐसी विमातायें शिवानी की कथाकृतियों में मिलेगी जो स्वयं आलस्य, आराम और विलासिता में डूबी रहती हैं तथा घर की अनाथ बच्ची से सुबह से शाम तक शोषण की चक्की में लगे रहने को बाध्य करती है। इस कथा संसार में ऐसी घाघ और प्रौढ़ा कुट्टिनियों की कमी नहीं है जो कि भोली ग्रामीण बालाओं, भटकी हुई अनाथ लड़कियों को पथभ्रष्ट कर उन्हें वेश्यावृत्ति की ओर प्रवृत्त करती हैं। किसी हरी भरी और सुखी गृहस्थी में ईर्ष्या और वैमनस्य के बीज बोकर उसको तहस नहस करने वाली भी कोई कुटिल स्त्री ही मिलेगी। समाज में दहेज के दानव को उभारने वाली कोई महिला ही होती है। शिवानी का यह कथा संसार वाममार्गी साधनाओं, मारक, मोहन और उच्चाट्टन जैसी गुह्य क्रियाओं, जादू टोनों और अन्य घृणित अनुष्ठानों में स्त्रियों को ही प्रमुख भूमिका के रूप में चित्रित करता है।

प्रश्न खड़ा होता है कि स्त्री द्वारा स्त्री का यह शोषण क्यों हो रहा है, आज की नारी इस पुरूष प्रधान समाज में एक स्त्री के हाथों ही क्यों परास्त और पीड़ित हो रही है। भारतीय समाज में नारी की नियति इतनी दोहरी मार क्यों सह रही है? सामाजिक कुप्रथाओं और नारी शोषण की भिन्न–भिन्न भूमिकाओं में एक नारी की प्रमुख भूमिका क्यों दृष्टिगोचर होती है? नारी आन्दोलन की बाढ़ में उत्साह का अतिरेक प्रदर्शित करने वाले आधुनिकाओं को क्या इस पहलू पर रूक कर आत्मविश्लेषण नहीं करना चाहिए? शिवानी का इस बिन्दु पर बहुत ही विचारोत्तेजक दृष्टिकोण है। वे ऊपरी समाधानों की बजाए समस्या की जड़ में प्रवेश करके कुछ विचार करने, सोचने समझने और कुछ सही निर्णय लेने की प्रेरणा देती हैं। शिवानी का नारी चिंतन इस पक्ष पर सोचने विचारने वालों को एक नई दृष्टि और नई सूझ प्रदान करता है।

संदर्भ

1. शिवानी –''कैंजा'' पृष्ठ 25
2. शिवानी – ''भैरवी'' पृष्ठ 50
3. शिवानी – ''चल खुसरो घर आपने'' पृष्ठ 12
4. शिवानी – ''स्वयंसिद्धा'' पृष्ठ 17
5. शिवानी – डॉ. सुखदेव शुक्ल–''हिन्दी उपन्यास का विकास और नैतिकता'' पृष्ठ 40
6. शिवानी – ''मायापुरी'' पृष्ठ 68
7. शिवानी – ''मायापुरी'' पृष्ठ 58
8. शिवानी – ''चल खुसरो घर आपने'' पृष्ठ 110
9. शिवानी – ''स्वयंसिद्धा'' पृष्ठ 27
10. शिवानी – ''चौदह फेरे'' पृष्ठ 27
11. शिवानी – ''चौदह फेरे'' पृष्ठ 51
12. शिवानी – ''कैंजा'' पृष्ठ 31
13. शिवानी – ''चौदह फेरे'' पृष्ठ 48
14. शिवानी – ''कृष्णवेणी'' पृष्ठ 20
15. शिवानी – ''श्मशान चम्पा'' पृष्ठ 16
16. शिवानी – ''चौदह फेरे'' पृष्ठ 29
17. प्रभा वर्मा– ''हिन्दी उपन्यास, सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया और स्वरूप'' पृष्ठ 282

Copyright © 2016. *Dr. Makrand Bhatt*. This is an open access refereed article distributed under the Creative Common Attribution License which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.